बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 109 /2024) **Year: 6th**

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 01/07/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ खेत तैयार करके उठी हुई क्यारियों अथवा मेडियों पर कद्दू वर्गीय सब्जियों कद्दू, खीरा, करेला, तरोई, लौकी आदि लोबिया, मिर्च, बैगन, टमाटर तथा भिंडी की बुआई करें। ➢ बेहतर होगा कि मिट्टी में भरपूर कंपोस्ट मिलाकर निर्धारित दूरी पर बनी मेड़ियों को काली पॉलीथिन की चादर से ढककर निश्चित दूरी की अंतराल पर छेद करके बीज की बुआई अथवा रोपाई करें। ➢ उपलब्धता के आधार पर तार, रस्सी अथवा झाड़ियों का पंडाल निर्माण कर बेलयुक्त सब्जियों को ऊपर चढ़ाएं। ➢ फसलों में फल छेदक, तना छेदक, माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंशा अनुसार प्रबंधन करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	तिल • तिल की बुवाई अच्छे जल निकास वाली हल्की व मध्यम मृदा विन्यास में करना चाहिये। • उर्वरक की अनुपात 20–10–किग्रा./हे0 नत्रजन– फास्फोरस की है। परन्तु जिन मृदाओं में कार्बनिक कार्बन और उपलब्ध फास्फोरस और सल्फर कम है वहाँ पर 20 किग्रा0 नत्रजन, 40 किग्रा. फास्फोरस व 25 किग्रा0 सल्फर दे सकते है। **दलहनी फसल** • खेत में बुवाई से 15–20 दिन पहले गोबर की खाद 5 टन/हे0 पर 2 टन/हे0 केंचुआ खाद डाल कर जुताई करें। • दलहनी फसलों के बीजों को राइबोजियम से उपचारित करके बुवाई करना चाहिये। • बीज को उपचारित करने के लिये राइबोजियम 5 ग्रा0 प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपयोग करें। **अरहर**

		• 25–60–30 किग्रा0 नत्रजन, फास्फोरस व पोटाष प्रति हैक्टेयर की दर से उर्वरकों का प्रयोग करे। यदि मृदा में सल्फर की कमी है तो बुवाई के समय 20 किग्रा0 सल्फर प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। जिंक की कमी होने पर 20 किग्रा0/हैक्टेयर की दर से उर्वरक का प्रयोग करें। **उड़द** फसल में 20 किग्रा0 नत्रजन प्रति हैक्टेयर 60 किग्रा0 फास्फोरस प्रति हैक्टेयर व 40 किग्रा0 पोटाष प्रति हैक्टेयर उपयोग करें। **धान की सीधी बुवाई** • धान की सीधी बुवाई – जिन किसान भाइयों के पास सिचाईं के साधन खेत समतल व सीडड्रिल की व्यवस्था है। वह किसान भाई सीधी बुवाई कर सकते है। • किसान भाई धान की सीधी बुवाई जून के महीने में कर सकते हैं। इससे किसानों को नर्सरी लगाने व रोपाई में मजदूर के प्रयोग करने में लगात की कमी होगी। • धान की बुवाई खेत में पलेवा करके भी कर सकते है अथवा सूखी विधि में भी बुवाई करके सिचाईं कर सकते है। प्रमाणित बीज को किसी विष्वसनीय संस्थानों से खरीदें व उपचारित कर लें। • बुवाई में उर्वरक 120:60:40 (एन.पी.के.) किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इसके लिये 66 किलोग्राम एम.ओ.पी. को बुआई से पहले खेत में बिखेर कर जुताई करें। संकर धान का बीज 15 से 20 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर व सामान्य बासमती का धान का बीज 25–30 किलोग्राम/हैक्टेयर की दर से सीडड्रिल के माध्यम से बुआई करें। सीड ड्रिल में 130 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से डी.ए.पी. को सीडड्रिल से दें। बुआई से पहले सीडड्रिल को कैलिब्रेट कर लें। धान की बुआई 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। बुआई के बाद से अंकुरण पूर्व खरपतवार नाषी पेन्डीमिथाइलीन 3.0 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से स्प्रे करें अथवा 2.5 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से प्रेटिलाक्लोर (सोफिट) का स्प्रे करें। ➢ उत्तम उपज वाली किस्म का चुनाव करें व इसे प्रमाणित संस्थाओं से ही खरीदें। बीज को बुवाई से एक दिन पहले फफूदी नाषक व कीट नाषक से उपचारित कर लें। ➢ नर्सरी का क्षेत्र सिंचाई के पास वाला चुनाव करें। ➢ 300 से 400 वर्ग मीटर का क्षेत्र एक एकड़ में धान की रोपाई के लिये उचित होता है। इसे जुताई करके तैयार कर लें। इसमें 2 कुन्टल गोबर की खाद बुवाई से 20–25 दिन पहले डालें व जुताई कर अच्छे से खेत में मिला दें। ➢ 20–40 ग्राम/वर्ग मीटर (10–16 किलो0/300–400 वर्ग मीटर) के हिसाब से बीज की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ रोपाई से पहले अगर नर्सरी में कागज की तरह सफेद लक्षण आयें तो 0.5 प्रतिषत फेरस सल्फेट का उपयोग करें। ➢ अंकुरित बीज को नर्सरी क्षेत्र में बिखेर दें तथा पक्षियों से बचाव करें। ➢ हल्की सिचाईं लगायें तथा नर्सरी क्षेत्र में नमी बनाये रखे। ➢ आवष्यकतानुसार खरपतवार नाषी व कीट नाषक का प्रयोग करें। ➢ 20–25 दिन पुरानी या 14 सेमी0 लम्बी पौध का प्रयोग रोपाई के लिये करें। **धान की फसल में पोषक तत्वों का प्रबन्धन** ➢ 5 टन गोबर की खाद या 1–2 टन केंचुआं खाद रोपाई से 25–30 दिन

		पहले खेत में डालें। ➢ खेत में पोषक तत्वों को मृदा परीक्षण के हिसाब से डालना अच्छा होता है। ➢ साधारणतया 40–50 किग्रा0/एकड़ डी0ए0पी0, 20–30 किग्रा0/एकड़ एम0ओ0पी0 व 10 किग्रा0/एकड़ की दर से जिंक सल्फेट को पडलिंग करते समय खेत में डालें। ➢ 40 से 50 किग्रा/एकड़ की दर से यूरिया किल्ले फूटने के समय (रोपाई के 15–25 दिन बाद) डालें। रोपाई के 35–48 दिन बाद 40–50 किग्रा0/एकड़ की दर से यूरिया डालें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही पशुओं में कई तरह के संक्रमण रोग जैसे खुरपका मुँहपका, लंगड़ी ज्वर गलधोटू चिकिन पॉक्स इत्यादि के संक्रमण का खतरा बढ जाता है जिसका उपचार कर पाना पशुपालको के लिए परेशानी का सबब होता है। इस कारण इन रोगो से बचाने के लिए टीकाकरण का कार्य प्रमुखता के साथ वर्षा शुरू होने से पहले कराया जाना अति आवश्यक है। अतः जिन पशुपालको ने अपने पशुओ में टीकाकरण नही कराया है वे सभी पशुपालक उपरोक्त बीमारियो से बचाव हेतु टीकाकरण पशुपालन विभाग के सहयोग से अवश्य करायें। इसके साथ ही पशुपालक ध्यान दे कि वर्षा ऋतु में पशुओं के बैठने के स्थान में सूखा रखना आवश्यक है गीले स्थानों पर पशुओं को बॉधने से कई जीवाणु जनित रोगों के फैलने का खतरा होता है। अतः पशुपालक नवजात व दुधारू पशओं को सूखे व छायादार स्थान पर ही बाँधे। हरे चारे की उपलब्धता से दुधारू पशुओं की भोज्य व्यवस्था को सुदृढ व पशुओं के पोषण पर होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है। इसलिए इस समय पशुपालक व किसानबन्धु हरे चारे की फसलो मक्का, बाजरा, एम.पी. चरी, ज्वार नेपियर, घास इत्यादि की बुवाई कर सकते है। जिससे पशुओ को हरे चारे की उपलब्धता बनी रहे।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ खड़ी फसलों तथा सब्जियों में नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें इससे उपचारित खेतों को टिड्डियां कम नुकसान करती हैं। ➢ सब्जियों की फसलों में रस चूसने वाले व फल बेधक कीट के जैविक नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें अथवा चार प्रतिशत नीम गिरी एवं 0.5 मिली0 लीटर स्टिकर (चिपकने वाला पदार्थ) प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़कने से जैसिड, सफेद मक्खी व

		मिली बग का प्रकोप कम हो जाता है। ➢ आम व अमरूद के बागों में फल मक्खी के नियंत्रण हेतु ग्रसित फलों को प्रतिदिन इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए। मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 x 5 x 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को शोधित कर लगाने से फल मक्खी प्लाईवुड के टुकड़ों की ओर आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ धान की पौधशाला में यदि पौधों का रंग पीला पड रहा है तो इसमें लौह तत्व की कमी हो सकती है। पौधों की ऊपरी पत्तियॉ यदि पीली और नीचे की हरी हो तो यह लौह तत्व की कमी दर्शाता है। इसके लिए 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट + 0.25 प्रतिशत चूने के घोल का छिडकाव करें। ➢ मिर्च के खेत में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाडकर जमीन में गाड दें। उसके उपरांत इमिडाक्लोप्रिड @ 0.3 मि0ली0 /लीटर की दर से छिडकाव करें। ➢ तिल, मूंग, उर्द व अरहर की बुवाई के लिए रोग अवरोधी प्रजातियों का चयन करें एवं बीज किसी प्रामाणित स्रोत से ही क्रय करे । ➢ तिल, मूंग, उर्द व अरहर की फसल को जड़ गलन एवं झुलसा आदि मृदा व बीज जनित रोगों के बचाव हेतु बीजों को थीरम व कार्बेन्डाजिम से 02 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से अथवा जैव कवकनाशी ट्राइकोडरमा 05 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोएं। ➢ मूंग, उर्द व अरहर की फसल की बुवाई से पूर्व बीजों को उपयुक्त राईजोबियम तथा फासफोरस को घुलनशील बनाने वाली जिवाणुओं (पीएसवी) से उपचारित करे इस उपचार से फसल के उत्पादन में वृध्दि होती है बीजोंपचार में सबसे पहले कवकनाशी से उपचारित करते है इसके पश्चात कीटनाशी से तथा अंत में राइजोबियम एवं पीएसवी से उपचारित करके बीजों को छाया में सुखा लेते है। ➢ अगेती फूलगोभी, टमाटर, मिर्च, बैगन व खरीफ प्याज की नर्सरी तैयार करने हेतु बीजो को थीरम 02 ग्राम अथवा बावस्टिन 02 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से अथवा जैविक कवक नाशी ट्राइकोडार्मा 5 ग्राम प्रति कि0ग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोएं तथा किसान भाई यह प्रयाश करें कि वे कीट अवरोधी नायलॉन की जाली का प्रयोग करें ताकि रोग फैलाने वाले कीटों से फसल को बचा सके।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	बागवानी वाली फसलों में अनेक कृषि कार्य जुलाई महीने में किये जाते है जैसे–फलदार पौधों की रोपाई, मूलवृन्त तैयार करने के लिए फल बीज की नर्सरी में

बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, खाद अवं उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, अन्तरवर्ती फसलों की बुवाई, जल निकास की व्यवस्था, फल पौधों में कटिंग, कलम चढ़ाना, बारिश में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन इत्यादि कार्य किये जाते है

कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें

- फलदार वृक्ष जैसे आम, अमरुद, निम्बू, अनार, बेर, बेल ,इमली इत्यादि के पौधों के रोपाई का कार्य किसान भाई अवस्य शुरु कर दें ।
- किसान भाई पौध लगाने से पहले प्रत्येक गढ्ढे की मिटटी में में २०–२५ किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद एवं एक किलोग्राम सुपर फास्फेट अवस्य दाल द।
- गुणवत्ता युक्त पौध तैयार करने के लिए मूलबृन्त की आवश्यकता होती है जिसके लिए फलों के बीज की बुवाई नर्सरी में अवस्य कर दें।
- अत्याधिक वर्षा के नुकसान से बचाने के लिए फल बागानों में सिचाई के लिए बनाई गई नालियों को जल निकास के काम में लेना चाहिए।
- पोषक तत्व प्रबंधन के अंतर्गत छोटे फल पौधों में ५० ग्राम नत्रजन प्रति पौधा आयु के हिसाब से देना चाहिए ।
- फल देने वाले पौधों को जिंक सल्फेट (200 ग्राम/पौधा)तथा बोरोन (100 ग्राम/पौधा) देना चाहिए ।

आम में मुख्य कृषि कार्य

- आम के संस्तुत पूरी खाद एंड आधी उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें।
- नए बाग लगाने हेतु पौध रोपाई का कार्य प्रारम्भ करे।
- आम में गूटी बांधे ।
- आम में कलम बांधने का कार्य किसान भाई शुरू कर दे ।
- मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए।

नींबू वर्गीय फलों में मुख्य कृषि कार्य

- नींबू सन्तरा अवं मोसम्बी के प्रत्येक पौधे को 20–30 किलोग्राम सड़ी गोबर के खाद, 1–2 किलोग्राम यूरिया , 1–2 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 0.5 – 0.6 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति वर्ष देना चाहिए ।
- मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम, जट्टी–खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें।
- नींबू में गूटी बांधने का कार्य करे।
- सन्तरे अवं मौसम्बी में कलिकायन चढाने का कार्य करें।

पपीते में मुख्य कृषि कार्य

- पित्त शिरा मोजैक विषाणु के नियंत्रण हेतु पौधों के छोटी अवस्था में ही विषाणु को फैलाने वाले कीटों (एफिड) का नियंत्रण एमिडाक्लोरोप्रिड (0.5 मिली/लीटर पानी) के छिड़काव से करें ।
- पौध तैयार करने के लिए नर्सरी में उन्नतशील किस्मों के बीज जैसे– रेड लेडी, ताइवान, पूसा नन्हा, अर्का प्रभात इत्यादि के बीज के बुवाई करें।

अमरुद में प्रमुख कृषि कार्य

		➢ अमरुद में गुटी एवं परस्पर सम्बन्ध विधि से पौध तैयार करने का कार्य करें । ➢ नए बाग का रोपण करते समय उन्नतशील प्रजातिओं जैसे – लखनऊ–49, संगम, श्वेता, ललित, इत्यादि चयन करें। ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए नर्सरी में बीजों के बुवाई करें। **आँवला में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ काली फफूद के प्रकोप से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक का छिड़काव करें । ➢ जुलाई माह में उन्नतशील प्रजातियों जैसे– चकैया, कंचन, कृष्णा, बनारसी इत्यादि का रोपण करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए फलों के बीजो को नर्सरी में बुवाई करें । ➢ नए पौध बनाने के लिए कलिकायन चढाने का कार्य करें। **बेर में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ पूर्व में तैयार गढ्ढों में पौध रोपण करें। ➢ छोटे बागों के बीच में हरी खाद हेतु ढैचा, सनई इत्यादि की बुवाई करें । ➢ नए पौध तैयार करने के लिए रूपांतरित छल्ला कलिकायन विधि का प्रयोग करें । **चीकू में प्रमुख कृषि कार्य** ➢ चीकू में कलम बांधने का कार्य करें । ➢ मूलवृन्त तैयार करने नर्सरी में खिरनी के बीज की बुवाई करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में विक्रय हेतु तैयार पौधों की ग्रेडिंग लंबाई व मोटाई के आधार पर करें तथा अपरिपक्व पौधों का बहुत सावधानी पूर्वक स्थानान्तरण करें। पॉलीथीन थैली से बाहर निकली जड़ों को तेज धार वाले औजार से काट दें। ➢ बरसात की संभावना को देखते हुए किसान भाई नर्सरी में जलनिकास की उचित व्यवस्था बनायें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह